2 विश्वविख्यात स्तूप का निर्माण हुआ था। इसके शासन काल पर जो अत्याचार हुआ था इसका कारण बौद्ध विहार के राजनीतिक षड्यंत्र का केन्द्र होना था और वे विदेशियों की मदद भी कर रहे थे

शुंग काल का महत्व सांस्कृतिक क्षेत्र में भी है। इस काल में ब्राह्मण धर्म की प्रतिष्ठा फिर से बढ़ी। कला साहित्य की काफी प्रगति हुई। शुंगों ने यहां वैदिक प्रथा पुनः कायम कर वैदिक धर्म के गौरव को बढ़ाया। मनुस्मृति का अंतिम संकलन इसी काल में हुआ। पतंजलि ने इसने महाभाष्य की रचना। पुष्यमित्र के काल में भी संस्कृत की प्रधानता फिर से बढ़ने लगी। ब्राह्मण धर्म के साथ भागवत धर्म का प्रचार इसी काल में हुआ। और कई विदेशी शासकों ने इसे अपनाना प्रारंभ किया।

कला के क्षेत्र में इस काल में जनजीवन को काफी महत्व दिया गया। स्थापत्य तथा चित्रकला दोनों का इस समय विकास हुआ। भरहुत का प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप इसी काल में बना। इसके साथ बोधगया के मंदिर का जंगला और सांची के स्तूप की चारदिवारी एवं प्रवेशद्वार इसी समय बना। विदिशा में कला की एक विशिष्ट शैली का जन्म हुआ।

पुष्यमित्र की गणना भारत के महान शासकों में होती है। उसने भारत की सेवा ऐसे समय की जब भूमकों का निरंतर आक्रमण हो रहा था। इसने विदेशी आक्रांता के प्रभाव से देश को मुक्त किया। ब्राह्मण होते हुए भी उसने धर्मनिरपेक्षता नीति का अवलंबन किया। वह उच्चकोटि का सैनिक और सेनापति था। अपनी योग्यता के बल पर उसने एक नए राजवंश की स्थापना की और मगध साम्राज्य के वैभव की रक्षा की।

लिया। यूनानियों का पहला आक्रमण शायद डेमेट्रियस के नेतृत्व में और दूसरा मिनांडर के नेतृत्व में हुआ था।
पुष्यमित्र शुंग ने यूनानी आक्रमणकारियों को पीछे धकेल दिया और अपनी महान विजय के उपलक्ष्य में दो अश्वमेध यज्ञ किया। किन्तु पुष्यमित्र ने दो अश्वमेध कर अपनी विजय घोषित की। उसके अश्वमेध यज्ञ का और भी महत्व था। एक ओर तो वह मौर्य साम्राज्य के खंडहर पर नए साम्राज्य के उत्थान को व्यक्त करता है, दूसरी ओर ब्राह्मण धर्म के नवीन आंदोलन का संकेत मिलता है।
पुष्यमित्र ने 36 वर्षों तक शासन किया। उसके साम्राज्य में बिहार, उत्तरप्रदेश के अलावा पंजाब का कुछ भाग और साकल का प्रदेश सम्मिलित था। पुष्यमित्र ने एक केन्द्रित प्रशासनिक व्यवस्था कायम किया। वायुपुराण से ज्ञात होता है कि उसने अपने साम्राज्य को आठ भागों में विभाजित कर दिया था और प्रशासनिक सुविधा के लिए दो राजधानी बनायी थी। वह समस्त क्षेत्रों पर अपना नियंत्रण रखता था और उसके पुत्र प्रतिनिधि के रूप में शासन करते थे। कालिदास के नाटकों से पता चलता है कि वह एक सभा व मंत्रिपरिषद् की मदद से शासन चलाता था।
पुष्यमित्र ब्राह्मण धर्म और वैदिक धर्म का समर्थक था। उसने फिर से ब्राह्मण धर्म की श्रेष्ठता स्थापित करने का प्रयास किया। उसने यज्ञ और कर्मकांड को फिर से प्रारंभ करवाया, जिसका आगे निरंतर विकास होता गया। बौद्ध ग्रंथों में उसे कट्टर ब्राह्मणवादी एवं बौद्धों का संहारक बताया गया है। उसपर आरोप लगाया जाता है कि उसने साकल में बौद्ध विहार को नष्ट करवाया था लेकिन ये बातें धार्मिक भावना से प्रेरित हैं। इन्हें सही नहीं कहा जा सकता। क्योंकि उसी के काल में भरहुत